आंग्ल भाषा में उपलब्ध मनोवैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद कैसे करें? विषय पर संवादात्मक व्याख्यान

दिनांक 2 सितंबर, 2015 को महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में संवाद मंच के संयोजन से साँय 4 बजे "*आंग्ल भाषा में उपलब्ध मनोवैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद कैसे करें?*" विषय पर डा. शैलेश मरजी कदम (सहायक प्रोफेसर, दूरस्थ शिक्षा विभाग) के द्वारा मुक्तिबोध भवन में भूतल पर स्थित मनोविज्ञान विभाग के व्याख्यान कक्ष में विशिष्ट संवादात्मक व्याख्यान दिया गया।

डा. शैलेशजी ने अनुवाद को विविध संस्कृतियों के बीच सेतु के रूप में बताते हुए इसे महतीय कार्य की संज्ञा दी। उनके अनुसार अनुवाद शब्दश: संभव नहीं है। कई बार एक भाषा से दूसरे भाषा में शाब्दिक अनुवाद करने पर अर्थ का अनर्थ प्रतिभाषित हो उठता है। अत: आवश्यक है कि अनुवाद करते समय जिस भाषा से संबन्धित सामग्री का अनुवाद किया जा रहा है उसके अर्थ, भाव और संवेदना के पहलुओं को ध्यान में रखा जाये। किस देश, काल और परिस्थिति में कोई रचना की गयी इसे भी समझा जाये। शब्द का अर्थ हमेशा सुनिश्चित नहीं होता है। कई बार संदर्भ में फेरबदल होने पर शब्दार्थ भी बादल जाता है। अत: पाठक वर्ग मूल कृति के रचयिता के विचार एवं उद्देश्य की स्पष्ट अनुभूति कर सके ऐसा किसी भी कृति के अनुवाद की प्रक्रिया में सुनिश्चित किया जाना चाहिए। अनुवाद कोई कोरी व्यवस्थित प्रक्रिया ही नहीं है बल्कि इसमे सृजनात्मकता महत्वपूर्ण होती है। यानी जिस भी कृति का अनुवाद करना है उसको समझने के लिए गहरे पानी बैठि जैसी तल्लीनता अपनानी होगी। इसके लिए संबन्धित भाषाओं में कुशलता का अर्जन आवश्यक होता है।

व्याख्यान के समाप्त होने पर विद्यार्थियों ने अनेक जिज्ञासाएँ व्यक्त की जिनका समाधान डा. कदम जी के द्वारा किया गया। इस व्याख्यान के श्रोतागण मनोविज्ञान विभाग के विद्यार्थी और अध्यापक थे। इस व्याख्यान का आयोजन डा. अमित कुमार त्रिपाठी जी के सहयोग से संवाद मंच के संयोजक डा. अरुण प्रताप सिंह के द्वारा किया गया व अंतत: व्याख्यान की संक्षिप्त रिपोर्ट डा. अरुण प्रताप सिंह के द्वारा प्रस्तुत की गयी।